आपने लिखा

कुछ साल पहले मैंने संदर्भ का चंदा भरा था परंतु उसके बाद नहीं भरा, क्योंकि पता ही नहीं चला कि उसका समय कब समाप्त हो गया। परंतु फिर भी आप संदर्भ लगातार भेजते जा रहे हैं। कृपया बताएं कि कितने का मनीऑर्डर करना है ताकि मैं अपने ऊपर चढ़े उधार को उतार सकूं।

चंदा समाप्त होने के बाद भी पुस्तक भेजना आपकी भलमनसाहत समझी जाए कि लेखा विभाग की गलती? कृपया बताएं।

प्रवीण शर्मा (एडवोकेट)
ई-3/33, सैक्टर–II
रोहिणी, दिल्ली

आज तक मुझे जो भी अंक मिले उनकी सामग्री वास्तव में बहुत ही नवीन व परंपरा से हटकर तथा ज्ञानवर्द्धक लगी।

पुस्तक में विज्ञान से संबंधित छोटी-छोटी बातों व प्रचलित धारणाओं को तर्कसंगत ढंग से समझाने का प्रयास तथा सुलझाने का ढंग, दोनों ही प्रशंसनीय हैं।

पुस्तक के कवर के भीतर व बाहर के चित्र बहुत ही स्पष्ट व वास्तविकता के नज़दीक ले जाने वाले होते हैं।

संदर्भ में जो कहानी दी जाती है वह भी परंपरागत कहानियों से हटकर मनोरंजक तथा ज्ञानवर्द्धक होती है।

मैं भी एक प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक हूं। यद्यपि मेरी शैक्षिक पृष्ठभूमि कला विषयों की रही है फिर भी सामान्य शिक्षक होने के कारण मुझे सामाजिक विज्ञान व सामान्य विज्ञान दोनों ही पढ़ाने पड़ते हैं। इसलिए मुझे आपकी पुस्तक से बहुत सहायता मिलती है।

मेरा सुझाव यह है कि कृपया पुस्तक में भौगोलिक सम्प्रत्यों व तथ्यों को भी विश्लेषित कर समझाने की कोशिश करें।

साथ ही आप पुस्तक में पूर्ण पृष्ठ पर किसी भी महान वैज्ञानिक का रंगीन चित्र प्रत्येक अंक में प्रकाशित करें, क्योंकि वैज्ञानिकों के चित्र बाज़ार में मुश्किल से मिलते हैं।

रमेश कुमार जांगिड़, भिरानी
रा. उ. प्रा. वि. अलायला
भादरा

मेरे ख्याल से संदर्भ में मूलभूत विज्ञान के संबंध में आधुनिकतम शोध, पर्यावरण संरक्षण और गैर-परंपरागत ऊर्जा स्रोतों की नवीनतम तकनीक जैसे विषयों को अधिक सम्मिलित करने की कोशिश करना चाहिए।

दिनेश कुमार व्यास
मंदसौर, मध्यप्रदेश

शैक्षिक संदर्भ का 30वां अंक हाथों में है। संपादकीय पढ़कर बहुत खुशी हुई। मुझे आशा है कि संदर्भ के प्रसार में ज़रूर वृद्धि होगी। आखिरकार पत्रिका ही ऐसी है। रेखागणित, चुंबक तथा नदी अपहरण लेख रुचिकर लगे क्योंकि इसकी

सामग्री अन्य लेखों से हटकर थी।

'प्रकाश संश्लेषण' तथा 'हवा का दबाव' भी ज्ञानवर्धक थे। कहानी ने पत्रिका को संपूर्णता दिला दी। कुल मिलाकर इस अंक ने लगभग हर विषय को थोड़ा बहुत छुआ है।

मुखपृष्ठ देखकर सर खुजलाने लगा, परंतु पत्रिका पढ़कर लगा कि मुखपृष्ठ बिल्कुल लेख के अनुसार है।

इतनी उच्च कोटि की पत्रिका के लिए मैं भी कुछ सुझाव देना चाहता हूं जिससे 'संदर्भ' और अधिक लोकप्रिय हो सके।

1. हर अंक में 'संपादकीय' अवश्य लिखें क्योंकि यही स्तंभ संपादक का होता है और संपादक अपनी बात नए ढंग से रखता है। पाठक भी विचारों को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।
2. अनुक्रमणिका के लिए पूरा एक पन्ना रखें।
3. कठिन शब्दों को हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों ही भाषा में लिखें तो और सुविधाजनक होगा।
4. एक संक्षिप्त विज्ञान समाचार स्तंभ शुरू करें।
5. एकलव्य प्रकाशनों की सूची हर अंक में दें।
6. विभिन्न पाठकों से प्रश्न आमंत्रित करें तथा उनके उत्तरों को विस्तार से प्रकाशित करें।

अरविंद कुमार कुरील
मुंबई

संदर्भ 29 देख रहा हूं। नंदी जी का प्रयोग पढ़ रहा था। ऐसे ही प्रयोगों और नवाचारों से भरे संदर्भ को देखकर मुझे इससे अपनत्व हो गया है। मैंने भी अपने पिछले पांच वर्षों के अध्यापन काल में कुछ सफल प्रयोग किए हैं।

मेरे कई प्रयोग एकलव्य से साम्य रखते हैं और कई तो परिस्थितियों की पैदाइश हैं। वैसे मैं कोई शिक्षण मिशन या विशेषज्ञता से नहीं जुड़ा हूं फिर भी कोशिश करूंगा कि अपने अनुभवों को संदर्भ के माध्यम से अन्य पाठकों के साथ बांट सकूं।

अजित जैन जलज
टीकमगढ़, मध्यप्रदेश

मैं कक्षा 10वीं का छात्र हूं। मुझे संदर्भ का अंक-30 प्राप्त हुआ। उस दिन मेरी विज्ञान की परीक्षा भी थी और विज्ञान में प्रकाश संश्लेषण से संबंधित कुछ कठिनाइयां थीं, लेकिन किशोर पंवार का लेख 'पौधों में भोजन' पढ़कर मेरी सारी कठिनाइयां दूर हो गईं और मुझे प्रकाश संश्लेषण के बारे में नई जानकारियां प्राप्त हुईं।

मैंने विज्ञान विषय से संबंधित सब लेख एक साथ ही पढ़ डाले। सभी लेख स्तरीय हैं।

दीपक कुमार सोंधिया
एम. पी. ई. बी. कॉलोनी
उमरिया. मध्यप्रदेश

हवा का दबाव: लेख पर टिप्पणियां . . . .

मुझे संदर्भ नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। वैसे मैं संदर्भ के सभी लेख नहीं पढ़ सकता लेकिन मैं उन लेखों को ज़रूर पढ़ता हूं जो मेरी रुचि के होते हैं। मैं संदर्भ के अंक-30 में अमिताभ मुखर्जी के लेख 'हवा का दबाव' पर कुछ टिप्पणियां दे रहा हूं।

1. पृष्ठ 36 पर लेखक कहता है कि "धरती के चारों ओर मौजूद हवा के कॉलम (स्तंभ) के कारण हवा का दबाव होता है।" यदि हम इस बात को सही मान लेते हैं तो निम्न दो स्थितियों में 'हवा के दबाव' पर विचार करना होगा।

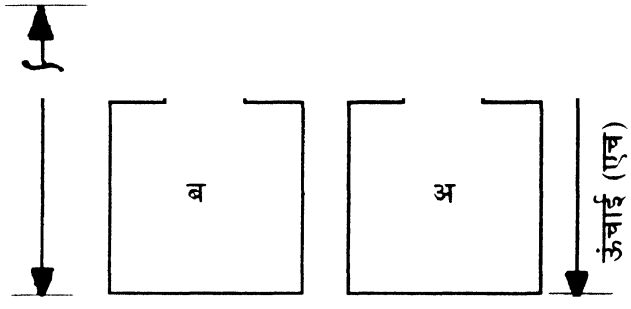

स्थिति 'अ' में हवा का दबाव हवा के स्तंभ की ऊंचाई 'एच' की वजह से होगा और 'ब' में हवा का दबाव, हवा के सम्पूर्ण वायुमंडलीय कॉलम की वजह से होगा। ऐसे में 'अ' में हवा का दबाव 'ब' से कम होना चाहिए, लेकिन जैसा कि हम जानते हैं यह सही नहीं है। दोनों स्थितियों में दबाव बराबर रहता है।

दबाव बराबर होने की व्याख्या हम केवल हवा के अणुओं की गतिज ऊर्जा से कर सकते हैं। किसी एक खास जगह पर हवा के अणुओं की गतिज ऊर्जा दोनों स्थितियों में समान होगी इसलिए वहां पर हवा का दबाव भी समान होगा।

2. पृष्ठ 38-39 पर लेखक विभिन्न ऊंचाइयों पर दबाव में अंतर को समझाते हुए बताता है कि यहां भी हवा के स्तंभ की ऊंचाइयों में अंतर है। ऊंचे स्थानों पर हवा का कॉलम छोटा होगा, लेकिन मेरे विचार से ऐसा नहीं है। ऊंचे स्थानों पर हवा का दबाव कम होने का कारण यह होना चाहिए कि वहां पर हवा का घनत्व कम होता है और तापमान भी, इसलिए हवा के अणुओं की गतिज ऊर्जा भी कम होगी। इसलिए ऊंचे स्थान पर हवा का

दबाव भी कम होगा।

3. पृष्ठ 36 पर लेखक कहता है

दबाव = ऊंचाई X घनत्व

क्या यह ऐसे नहीं होना चाहिए: दबाव = ऊंचाई X घनत्व X गुरुत्व बल

4. पृष्ठ 38 पर 'वायुमंडल का दबाव लगभग 1 किलोमीटर/ वर्ग सेंटीमीटर होता है'। यहां पर किलोमीटर की जगह किलोग्राम होना चाहिए था।

समर बागची
11 ए, सुल्तान आलम रोड़
कलकत्ता

संदर्भ का 30 वां अंक मिला। कवर और बैक कवर बहुत अच्छे लगे। उमेश चौहान के लेख और चित्रों ने तो कमाल ही कर दिया। उन्हें हार्दिक बधाई। इसी तरह संजय तिवारी का लेख 'नदी अपहरण' बहुत बढ़िया लगा। भूगोल विषय इतना रोचक व रोमांचक है यह इस लेख को पढ़कर अनुभूति हुई। वरना मैं तो भूगोल को उबाऊ और नीरस ही समझता था। इतना जीवंत लेख पहली बार पढ़ने में आया। इस लेख के लिए लेखक को साधुवाद।

एक बात की शिकायत ज़रूर करूंगा, वह है पत्रिका के प्रकाशन में देरी। कृपया कुछ कीजिए। अच्छी और स्तरीय सामग्री के साथ पत्रिका की नियमितता भी संदर्भ के उज्जवल भविष्य के लिए ज़रूरी है।

किशोर पंवार
प्राध्यापक, वनस्पति विज्ञान
सेंधवा, मध्यप्रदेश

संदर्भ से प्रथम साक्षात्कार अंक 29 से हुआ। अब लगता है कि संदर्भ के साथ यह सफर प्रारंभिक अंकों से भी हो सकता था। खैर रुचिकर और पठनीय 30वें अंक के लिए बधाई।

नदी अपहरण, चुंबक इतिहास के आइने में, प्राचीन भारत में रेखागणित ... जैसे लेख न केवल हमारे ज्ञान में वृद्धि करते हैं अपितु हमारी विश्लेषणात्मक क्षमता को बढ़ाने में भी सहायक होते हैं।

संपादकीय टिप्पणी विचारणीय है। संदर्भ की यात्रा अविरत हो इसके लिए आपके साथ हम पाठकों को भी प्रयास करने होंगे। कोशिश कर रहा हूं कि शहर के पुस्तकालय व पुस्तक विक्रेता संदर्भ रखने में रुचि लें।

रोहित शुक्ला
सुभाष कॉलोनी
छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश

अंक 30 मेरे हाथों में है। अबकी बार संदर्भ में अनेक आकर्षण भरे पड़े हैं। कौन-से लेख की प्रशंसा करूं और कौन-से की नहीं? हर एक 'एक से बढ़कर एक' है। फिर भी मुझे 'ज़रा सिर खुजलाइए' सर्वप्रिय है। मैं संदर्भ की विषय-सूची को देखते ही यह कॉलम पढ़ने लगता हूं।

इस अंक से आपने रामकृष्ण भट्टाचार्य द्वारा लिखित 'प्राचीन भारत में रेखागणित' आलेख को अगले छह अंकों में प्राचीन भारत में रेखागणित के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देने के लिए आरंभ किया है। यह बहुत ही प्रशंसनीय है। 'कहां है मेरे दोस्त का घर' कहानी दिल को छू गई। अन्य सामग्री भी आकर्षक लगी।

शैक्षिक संदर्भ के बारे में मेरे भी कुछ सुझाव हैं। जैसा कि आपने इस अंक में स्पष्ट किया कि आप संदर्भ को खुले बाज़ार में बुक स्टॉल्स पर उपलब्ध करवाने जा रहे हैं। यह एक प्रशंसनीय एवं सराहनीय कदम है। इससे संदर्भ सामान्य पाठकों तक भी पहुंचेगी। मेरा सुझाव यह है कि आप संदर्भ में कोई ईनामी प्रतियोगिता को स्थान दें। इससे संदर्भ के पाठकों में वृद्धि होगी।

मेरा दूसरा सुझाव है कि आप इसमें एक ऐसा कॉलम शुरू करें जिसमें पाठकों द्वारा सामान्य एवं विज्ञान से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए जाएं। इससे भी पाठकों की संख्या में वृद्धि होगी और पाठकों को अपनी जिज्ञासा पूरी करने का अवसर प्राप्त होगा। तीसरा कि संदर्भ खुले बाज़ार में दो महीने के शुरुआत में ही पहुंच जानी चाहिए। संदर्भ का मूल्य भी ऐसा हो कि सामान्य व्यक्ति को इसे खरीदने में अपनी जेब की चिन्ता न रहे। संदर्भ को खुले बाज़ार में लाने का प्रयास करने पर आपको हार्दिक बधाई।

राम कुमार वर्मा
मोरनी
ज़िला पंचकूला, हरियाणा

पिछले अंक की संपादकीय पढ़ी। इस पत्रिका की महत्ता को देखते हुए इसका सभी जगह उपलब्ध होना ज़रूरी है।

यह पत्रिका अन्य विज्ञान की पत्रिकाओं से अपनी अलग पहचान रखती है अतः इसका देर से उपलब्ध होना सराहनीय एवं उचित है। हमें इसमें प्रकाशित सामग्री बेहद पसंद आती है।

आपके द्वारा भेजा गया फिल्टर पेपर हमारी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण खत्म हो गया, उसे हमने पड़ोसी रिश्तेदार के दूध के परीक्षण के लिए भेज दिया था। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि यदि संभव हो सके तो दुबारा फिल्टर पेपर भिजवाने की कृपा करें।

पवन कुमार जैन
नीमच खेड़ा, उदयपुर
राजस्थान